श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. : 9

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ Answer

ऐनरोलमेन्ट नंबर [illegible]

शहर ~~Jalgaon~~

विद्यार्थी का नाम [illegible]

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

क्रं.	जवाब
(१)	सत्ता
(२)	निरूपद्रवता
(३)	गारुडी
(४)	विकलेन्द्रिय
(५)	अष्टांग योग
(६)	पुण्य के
(७)	दडंको
(८)	प्रभावक
(९)	हठाग्रह
(१०)	आत्मद्रव्य
(११)	आत्मा
(१२)	शैलेशीकरण
(१३)	अयोगी
(१४)	सलामपाक
(१५)	दिनकर भट्ट
(१६)	विद्याधरगच्छ
(१७)	प्रसंगोपात
(१८)	श्री वासुपूज्य म.
(१९)	मोहनीय कर्म
(२०)	नौ

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

क्रं.	जवाब	क्रं.	जवाब
(१)	मुक्तेसरगढ	(५)	समकालमें वद्यमान
(२)	समुच्छिन्न क्रिया	(६)	भव्य उपासकोंको
(३)	कुल को	(७)	प्रेम
(४)	स्त्री और पुरुषवेद	(८)	स्थिरता
(५)	भद्रहरि	(९)	अंतसमय
(६)	1/3 भाग	(१०)	नरकी
(७)	हरिकेशी मुनी	(११)	तुम जय पाओ
(८)	जीरावल्ली तीर्थ	(१२)	विकलेन्द्रिय
(९)	वेदाशाह	(१३)	हर्ष
(१०)	जयप्रभसूरि	(१४)	गर्भज गमन
(११)	दशार्णभद्र राजा	(१५)	अग्नि
(१२)	अमिला	(१६)	देने
(१३)	सूक्ष्मकाय योग	(१७)	होते है
(१४)	[illegible] सात	(१८)	यहाँ निरूपद्रवता
(१५)	पाप	(१९)	जगत में
		(२०)	तुम

प्रश्न-३ शब्दार्थ

क्रं.	जवाब
(१)	वेद
(२)	तत्पर
(३)	संस्थान
(४)	लड़ाई

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

क्रं.	जवाब	क्रं.	जवाब
(१)	4	(६)	10
(२)	5	(७)	3
(३)	6	(८)	9
(४)	2	(९)	8
(५)	1	(१०)	7

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

क्रं.	जवाब
(१)	108
(२)	1224
(३)	चौथे
(४)	8
(५)	7
(६)	15
(७)	20
(८)	९40000
(९)	पांचेक हजार
(१०)	72

क्रं.	प्रश्न-६ ✓ या ×	क्रं.	प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	✓	(१)	18
(२)	×	(२)	7
(३)	×	(३)	13
(४)	×	(४)	12
(५)	✓	(५)	18
(६)	✓	(६)	2
(७)	×	(७)	15
(८)	✓	(८)	8
(९)	✓	(९)	18
(१०)	✓	(१०)	12

प्रश्न-१ मिल हुए गुण	प्रश्न-२ मिल हुए गुण	प्रश्न-३ मिल हुए गुण	प्रश्न-४ मिल हुए गुण	प्रश्न-५ मिल हुए गुण	प्रश्न-६ मिल हुए गुण	प्रश्न-७ मिल हुए गुण	प्रश्न-८ मिल हुए गुण	कुल गुण

रीमार्क ______________________ जांचनेवाले की सही ______________________

प्रश्न - ८

१. तुम जलभय में से, अग्निभय में से, विष में से, विषधर भय में से, दुष्ट भय में से, राज भय में से, राक्षस के उपद्रव में से, शत्रु समूह के उपद्रव में से, मरकी के उपद्रव में से, चोर के उपद्रव में से, इति संज्ञक उपद्रव में से, शिकारी पशुओं के उपद्रव में से, और भूत पिशाच तथा शाकिनीओ के उपद्रव में से रक्षा कर रक्षण कर। उपद्रव रहीत कर, शांति कर, तुष्टि कर, पुष्टि कर, क्षेम कर।

२. तिर्यंच और मनुष्य के तीन वेद होते है। चार प्रकार के देवताओं में स्त्री और पुरुष वेद होता है। पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय और नारकीयों में एक नपुसक वेद होता है। पुरुषवेद, स्त्रीवेद एक नपुसक वेद ये तीन वेद होते है। ये तीनों वेद गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय एंव मनुष्य के दंडक में होते है। चार प्रकार के देवो के 13 दंडक में पुरुष और स्त्री ऐसे दो ही वेद होते है। पृथ्वीकायादी पाँच, द्विन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, के तीन एवं नरक इन नौ दंडकों में एक ही नपुसक वेद होता है।

३. करवत प्रथा गंगानदी के पास मुक्तेस्वरगढ में कि जाती है। इस स्थानमें करवत रखवाने के महत्व केंद्र के रुप में देशभर में प्रसिध्दि प्राप्त कि हुइ थी। उस समय लोंगों में ऐसी मान्यता प्रचलित थी कि जो कोइ इच्छुक इस पवित्र स्थान पर करवत रखवा कर जीवन का स्वेच्छा से अंत लाये तो उसकी आकांक्षा अनुसार की सिध्दि पुनर्जन्म में आवश्य प्राप्त होती है। इस भ्रमण से गैर मार्ग की और खींचकर हजारो श्रध्दालुओ की यहाँ आहुति दी जाती, करवत रखवाने के विचार ने ऐसा दीवानापन लगाया, कि लोंगो की संख्या प्रतिदिन बढती ही जाती थी।

४. आज तो सत्ता का मद कदम कदम पर देखने मिलता है। कोणिक को सत्ता का मद ऐसा था कि उसने मद में आकर प्रभु महावीर के परम उपासक चेडाराजा के साथ युध्द किया जिसमें लाखो मनुष्यों की हिंसा हुई। एक बार महावीरस्वामी का भव्य सामैया निकालने वाले श्रावक कोणिककी ऐसी अधम मनोदशा का कारण लक्ष्मिमद ही था। 14 हजार रत्न थे, सोलह हजार देव सेवा में हाजीर थे, फिरभी लाभ मद में कैसे परिणाम का भोग बनाए गर्व अहंकार या अभिमान किसी का टिका नहीं है, इसने कभी किसी की सद्‌गति होने नहीं दी है।

५. केवली भगवंत जिनका आयुष्य सिर्फ पाँच ह्रस्वाक्षर के उच्चारण जितना ही है तथा पर्वत के समान जिनका शरीर निश्चल है उन्हें शुक्लध्यान के चौथे ध्यान स्वरुप शैलेशीकरण होता है। सूक्ष्म काययोग में रहेकर पर्वत की तरह स्थिर रहना ही शैलेशीकरण है। इस शैलेशीकरण का प्रारंभ कर चौदहवे अयोगी गुणस्थान में जाने की तयारी करते है।